Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VIII, Issue No. XVI, Nov-2014, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

धर्मवीर भारती के कथा–साहित्य का वैशिष्ट्य

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

धर्मवीर भारती के कथा–साहित्य का वैशिष्ट्य

Dr. Sarita Batra

S.M.S. Khalsa Labana Girls College, Barara (Ambala)

---------------------------------x---------------------------------

कथा लेखन के क्षेत्र में डॉ. धर्मवीर भारती जी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारती जी के काव्यसृजन की दिशा प्रगतिवाद एवं प्रयोगवाद के संघर्ष से निर्मित हुई है। उनके सृजन का सर्वाधिक उत्कर्ष का काल प्रयोगवाद और नयी कविता का काल रहा है। वास्तव में रुढ़िमुक्त नये प्रयोगवाद काव्य और कथा साहित्य को मानवतावादी दृष्टि देने वाले भारती जी ने पाठकों के हृदय पर अपनी लेखनी की छाप छोड़ी है।

वस्तुतः उपन्यास और लघुकथा के बीच लंबी कहानियों की पृथक प्रकृति होती है। इनमें मूल संवेदना गहराती–गहराती इतनी सघन होती जाती है कि पाठकीय चित्त अपने व्यापक बोध परिवेश के साथ रंग जाता है। किन्तु फैशन जीवी लंबी कहानियों में, जिनमें जिये जाते जीवन के नाम पर किसी टेकनीक, किसी फार्मूले का प्रयोग होता है, यह मर्मस्पर्शिता नहीं होती है। इनमें बौद्धिक चमत्कार चाहे जिस तेवर में निकलते चलें पर हृदयस्पर्शिता नहीं होती।1 स्वाभाविकता एवं लोक संपृक्ति कहानियों का आदि से अंत तक ऐसा कसा हुआ सहज स्वर और संगीत है जो कहानियों को जीवंत बनाता है। यही जीवंतता हमें धर्मवीर भारती के कथा साहित्य में मिलती है।

धर्मवीर भारती के कथा–साहित्य का वैशिष्ट्य : कथा साहित्य को आम लोगों के दुःख–सुख से जोड़ने के सिलसिले में गांव–शहर, कस्बा –गली और दुकान–मकान की जो कहानियाँ आयी है उनमें भारती जी की 'बंद गली का आखिरी मकान' का विशेष महत्त्व है, जो सहमे, घुटे लोक जीवन का प्रमाणिक दस्तावेज है। इस प्रकार सील से भरे घर, टूटे मन, अंदर–बाहर अंधकार, हर चीज का कुढ़न, गलियों के टूटे रिश्ते, आम आदमी की रहाइसि को गहराई से चित्रित करने वाले मात्र चार लंबी कहानियों का संग्रह 'बंद गली का आखिरी मकान' हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान का अधिकारी है।

भारती जी का कथा साहित्य अनुराग मन का पाठ है, जिसमें प्रेम का स्थान प्रथम है। अपनी कहानियों के माध्यम से उन्होंने समाज को नई प्रेरणा दी है। 'गुलकी बन्नो' कहानी में गुलकी की पीड़ा व्यक्तिगत न होकर पाठक की पीड़ा हो जाती है। 'सावित्री नंबर' दो कर्त्तव्य बोध का पाठ पढ़ाती हैं, पर अंत में पीड़ा की अनुभूति छोड़ जाती है। 'यह मेरे लिए नहीं' जीवन का यथार्थ प्रस्तुत करती है। 'कुलटा' कहानी में स्त्री के प्रति सामाजिक नजरियें को यथार्थ के साथ प्रस्तुत किया गया है।

भारती जी के कथा साहित्य की प्रमुख विशेषता है लोक जीवन की व्यथा कथा एवं दबे घुटे दर्दीले वातावरण का जीवंत चित्रित, जिसे उन्होंने समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है। धुआं कहानी आज की समाज व्यवस्था को इंगित करती है। 'मरीज नंबर सात' में आज के परिवेश में अर्थहीन होते रिश्तों को सूक्ष्मता के साथ उभारा गया है।

भारती जी ने कहानियों का कथानक आंतरिक प्रेरणाओं से भी ग्रहण किया है और बाह्य संदर्भों से भी। सरलता एवं स्पष्टता उनकी कहानियों की विशेषता है। भारती जी ने जीवन के सत्य को अंकित करने में कहीं भी बौद्धिकता का आश्रय नहीं लिया यही कारण है कि उनके पाठकों की संख्या अधिक है।

कथा साहित्य के क्षेत्र में अज्ञेय के बाद भारती का नाम इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि ये अज्ञेय के समान अभिजात्यपूर्ण नायकों को न उठाकर मध्य वर्ग के लिए नायकों को आधार बनाकर उनके प्रेम और विकृति को शब्द देते हैं। उन्होंने दो उपन्यास लिखे हैं–गुनाहों का देवता, सूरज का सातवां घोड़ा। उनके मनोवैज्ञानिक होने का प्रमाण है। यह केवल दो कारणों है एक मन में स्थित दमित काम–वासना और उससे उत्पन्न असामाजिकता का पक्ष दूसरा उपन्यास में चित्रित कथावस्तु में लेखक का निजी दर्शन और मनोवैज्ञानिक भाव। इन दोनों के ही सामंजस्य से कृतियों में वैयक्तिकता तो उभरी ही है, साथ ही मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि प्रबल हो गयी है। 'गुनाहों का देवता' उपन्यास मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। युवा मन का सजीव चित्र अंकित करने में भारती जी पूर्ण सफल हुए हैं।

पात्र : भारती जी ने अपने पात्रों को यथार्थ जीवन से चुना है और उसी यथार्थता से उन्हें प्रस्तुत भी किया है। उनके कथा साहित्य के पात्रों में अपूर्व सप्राणता ही नहीं यथार्थ की गहरी पकड़ भी परिलक्षित होती है। भारती जी की कहानियों में उनके पात्र एवं स्थितियां यथार्थ जीवन के लोगों एवं स्थितियों की स्थानापन्न बनकर ही उभरी हैं। यही कारण है कि वे हमारे जीवन के विभिन्न रंगों के सजीव एवं यथार्थ चित्रण प्रतीत होते हैं और उद्वेलित करते हैं।

भारती जी ने आधुनिक समाज के मध्य वर्ग के पात्रों की यथार्थवादी आधार भूमि पर मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। जहाँ जल्लाद जैसे निम्न स्तर के पात्र से लेकर उच्चतम स्तर के पात्रों को कथा साहित्य में स्थान मिला है। फिर भी हम कह सकते हैं कि उनके साहित्य में सामान्यतः मध्य वर्ग एवं निम्न वर्ग के पात्र भी अधिक हैं। उन्होंने भारतीय समाज में नारी की दशा एवं दिशा को यथार्थ अभिव्यक्ति प्रदान की है। पात्रों का चित्रण इस प्रकार है कि पाठकों की सहानुभूति उन्हें सहज ही प्राप्त हो जाती है।

उनकी कहानी 'सावित्री नंबर दो' में सावित्री की पीड़ा एक नये कोण से उठती है–शरीर की पीड़ा बनाम मन की पीड़ा। इस

कहानी में क्षयग्रस्त सावित्री भारतीय नारी के पवित्रता बोध के संदर्भ में साक्षात व्यंग्य जैसा चित्रित है।

भारती जी के उपन्यासों के पात्र सजीव हैं और सहसा ही मानवीय अस्थिमज्जा में पाठक के सम्मुख आ खड़े होते हैं। 'गुनाहों के देवता' में आधार स्तंभ चन्दर तथा सुधा दो पात्र हैं। भारती जी ने दोनों पात्रों के माध्यम से मध्यवर्गीय युवकों और युवतियों का स्वरूप उद्‌घटित कर उनके चरित्र में तथाकथित उदात्ता लाने हेतु उनसे बहुत कुछ करवाया है। गेसू और बंटी एक गौण और सामान्य चरित्र है। अन्य पात्र में सुधा, पम्मी, डॉक्टर शुक्ला आदि हैं।

'सूरज का सातवां घोड़ा' उपन्यास में मुख्य पात्र माणिक मुल्ला है। माणिक मुल्ला कमोवेश सभी कहानियों में विद्यमान है। वह कहानियों का श्रावयिता भी है। वह मध्य वर्ग का प्रतिनिधि पात्र होने के साथ समाज की झूठी मर्यादा, रीति–रिवाज, जाति प्रथा तथा आर्थिक विषमता के प्रति क्रूद्ध भी है।

संवाद : भारती जी ने अपनी कहानियों में संवादों के माध्यम से व्यक्तित्व को उभारा है जैसे–'बंद गली का आखिरी मकान'– 'गुलकी बन्नो'– घेघा बुआ ने रास्ते पर पड़ी गुलकी को उठाते हुए बिगड़कर कहा है – 'औकात रत्ती भर नै, और तेहा पौवा भर।' छोटे बच्चों का अवधी बोली में सवाल–जवाब करते हुए बुढ़िया का खेल खेलना बड़े ही सरस रूप में उपस्थित किया गया है। कहानी के संवाद छोटे पर अर्थपूर्ण है। 'कुलटा' कहानी में संवाद पात्रों की मनःस्थिति को स्पष्ट करने में सहायक हुए हैं। लाली के संवाद उसकी दीनता, विवशता को प्रगट करते हैं तो भइया के संवाद लाली के प्रति उनके शक को ––– "जैसे तो यह ढंग निकाला है ! कमीनी ! बदजात ! नहीं भैया, मगर –––– मगर उसने कोई और बात नहीं की।

अभी इन लोगों का ढंग नहीं जानते ! पूरी कुलटा है यह।

क्यों किसी पर तोहमत लगाते हो !

तोहमत ! जानते हो विधवा है यह। दूसरा ब्याह किया है मैंने पहले ही दिन कह दिया था –––––––।

लेकिन इतने से ही दुश्चरित्र कैसे हो गयी ? 3

इस प्रकार भारती जी ने संवादों में आये शब्दों के द्वारा पात्रों की मनःस्थिति को रूपायित किया है। संवाद छोटे, रोचक तथा गतिशील हैं। उनकी कहानियों में संवादों के कारण पात्रों का व्यक्तित्व सहज ही उभर जाता है।

कथानक : उपन्यास की सारी कथा किसी इति वृत्त की भांति ही वर्णनात्मक नहीं होती। पात्र यथावसर अपने वार्तालाप, स्वकथन अथवा कथोपकथन द्वारा उसे गति देते हैं। पात्रों के इस आलाप–संलाप को ही संवाद का नाम दिया गया है। उपन्यास के पात्र मानव–जीवन के प्रतिबिंब होते हैं अतएव उनकी बातचीत की कसौटी भी मानव की बातचीत ही होती है किसी भी उपन्यास की सफलता के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है।

लेखक की टिप्पणी संकेत तथा पात्र के कथन भी इस दृष्टि से उल्लेख्य हैं। संबंध विच्छेद अथवा पारिवारिक जीवन में जो एक प्रकार की खंडनात्मक स्थिति पनप रही है उसके लिए काफी अर्थों में समाज को दोषी ठहराया गया है – पर्याप्त समय में प्रचलित मान्यताएं जीर्ण–शीर्ण (समय स्थिति विपरीत) होने पर उनका अंधानुकरण कहाँ तक न्यायसंगत है, विचारणीय समस्या है। डॉ. शुक्ला का भी इसी प्रकार का अभिमत है –"सुधा का विवाह कितनी अच्छी जगह किया गया, मगर सुधा पीली पड़ गई है। कितना दुःख हुआ देखकर और बिनती के साथ यह हुआ। 4

भारती जी के उपन्यास 'सूरज का सातवां घोड़ा' में माणिक मुल्ला की भंगिमाओं का वर्णन है, वह वार्तालाप करता है, अपने शब्दों में उनके सामान्य निष्कर्ष प्रस्तुत करता है, बीच–बीच में टिप्पणी भी करता है और उनसे सुनी कहानी को अपने शब्दों में व्यंग्य द्वारा धारदार बनाते हुए प्रस्तुत करता है।

भारती जी ने संवाद रूप में टिप्पणियों को प्रस्तुत कर कथा को नाटकीय बनाया है तथा व्यंग्ययुक्त वार्तालाप में भी सर्जनात्मक भूमिका पूरी की है। देशकाल या वातावरण का संबंध घटनाओं या पात्रों से होता है, कथानक को स्वाभाविक एवं प्रभावशाली बनाने के लिए इसका उपयोग लेखक करता है।

वातावरण : भारती जी कहानियों में वातावरण का प्रभाव स्पष्टतः देखा जा सकता है, 'हरिनाकुस और उसका बेटा' कहानी पर गांधीवाद का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है और यही हृदय परिवर्तन कहानी के वातावरणको भी परिवर्तित कर देता है।

इसी प्रकार 'कुलटा' कहानी में 'कुलटा' नाम देकर ऐसा वातावरण निर्मित किया कि लाली को लोग दुश्चरित्र समझने लगते हैं।

भारती जी ने 'चाँद और टूटे हुए लोग' में मानवीय संबंधों को रागात्मक एवं यथार्थ धरातल पर एक साथ प्रस्तुत करना चाहा है। एक ऐसा वातावरण जो प्रेम के विषय में तीन दोस्तों के मन की विचित्र आकांक्षाओं, समस्याओं एवं प्रश्नचिन्हों से भरा हुआ है, इस प्रकार भारती जी ने सामाजिक वातावरण को संबंधों, समस्याओं एवं भावना इन तीनों समस्याओं से युक्तकर इनके सामंजस्य को समाधान के रूप में प्रस्तुत किया है।

'गुलकी बन्नो' का वातावरण कथा को सजीव बनाने में सहायक हुआ है। तो 'बंद गली का आखिरी मकान' में खोखली आधुनिकता पर व्यंग्य के साथ व्यक्ति के वस्तु से लगाव को चित्रित किया है। जो जिंदगी के मायने बदलकर अलग वातावरण बना देता है। इसी प्रकार 'गुनाहों के देवता' उपन्यास कथ्य एवं वातावरण के प्रभावी चित्रण के कारण प्रभावोत्पादक बन गया है। सुधा से संबंधित वातावरण की सृष्टि रचना में भारती जी का लेखन अद्‌भुत है।

उद्देश्य : वस्तुतः भारती जी की कहानियों का उद्देश्य भावात्मक संबंधों की अभिव्यक्ति है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भारती जी की कहानी–कला भी अन्य विधाओं की भांति विविध आयामों से युक्त है।

उनकी कहानी 'हरिनाकुस और उसका बेटा' में नारकीय यथार्थ का अंकन है। जो बाद में हृदय परिवर्तन का कारण बन जाता है। तो 'कुलटा' कहानी नगरीय धरातल पर टिकी है, जहाँ जीवन में जिए हुए अनुभूतियों, संवेदनाओं, सुख–दुख को स्वानुभूति के स्तर पर लाकर नारी के ममत्व को दर्शाया गया है। इसी प्रकार 'बंद गली का आखिरी मकान' का उद्देश्य प्रत्येक दृष्टि से तंग गलियों के सजीव जीवन को चित्रित करना है। 'गुलकी बन्नो' में बिना किसी गढ़न और तराश के कहानी और जीवन को आमने–सामने कर देने की कला का दर्शन हुआ है तो 'सावित्री नंबर दो' में पीड़ा एक और नए कोण से उठती है, क्षयग्रस्त सावित्री नंबर दो में पवित्रता बोध के संदर्भ में क साक्षात् व्यंग्य से साक्षात्कार कराया है। इस प्रकार

www.ignited.in

हम कह सकते हैं कि भारती जी सामाजिक परिधि की यथार्थता को अभिव्यक्ति देने वाले कहानीकार हैं। भारती जी ने कहानियों में पात्रों को जीवन के यथार्थ से चुना है, और उसी यथार्थता से उन्हें प्रस्तुत भी किया है।

भारती जी ने 'गुनाहों के देवता' उपन्यास में बहुत कुछ कहने का प्रयास किया है। निम्न–मध्य वर्ग के युवक–युवतियों की कुंठा, निम्न–मध्य वित्त वर्ग के लोगों का खोखला वैवाहिक जीवन झूठा धर्माचार, नैतिकता और आधे इंच जमी बर्फ की सफेदी के नीचे गंदे पानी अथाह गहराइयों के चित्रण के साथ भारती जी ने समाज को नया संदेश दिया है। भारती जी के उपन्यासों का मुख्य उद्देश्य मध्य वर्गीय समाज की कहानियों को समाज के सामने प्रस्तुत करना है। लेखक ने भूमिका में लिखा है – 'मेरी निगाह में तो समाज की वर्तमान मान्यतायें और व्यवस्था एक बहुत बड़ा गुनाह है क्योंकि वह आधुनिक तरुण के स्वस्थ विकास की हत्या है। वे अंतर्विकारों और उलझनों से उबरकर एक स्वस्थ सामाजिक धरातल पर नहीं आ पाते ––––ऐसी नैतिकता के खिलाफ विद्रोह करता हूँ।'

भारती जी के कथा–साहित्य का यह भी वैशिष्टय रहा कि उन्होंने अपनी कहानियों, उपन्यायों में सरल वाक्यों का प्रयोग अधिकांशतया वर्णात्मक प्रसंग में किया है। इनके उपन्यासों तथा कहानियों के पात्र प्रायः लंबे तथा अपेक्षाकृत जटिल वाक्य बोलते हैं तो शिक्षित कुछ छोटे और कुछ कम जटिल वाक्यों का प्रयोग करते हैं।

भारती जी के कथा–साहित्य में विशिष्ट वाक्य का प्रयोग चिन्ह मुखर है। लगता है, सारे चिन्ह बोल रहे हैं, शब्दों में बोलने की कोई जरुरत नहीं। यह विशिष्ट वाक्य एक आईना हैं, जिसमें पात्रों की बदली हुई विभिन्न मुद्राओं को देखा जा सकता है – प्रश्न, चुप्पी और आश्चर्य। भारती जी ने मनुष्य की भावनाओं को प्रकट करने के लिए, वाक्यों के सार्थक शब्दों को व्यवस्थित करके कहानी तथा उपन्यासों को जीवंत बनाया है। वाक्यों की अभिव्यक्ति से (पाठक के मन में) कोई जिज्ञासा अथवा अपूर्णता का भाव शेष नहीं रह जाता। पाठक सरलता से एक वाक्य से दूसरे पर फिसलता हुआ बढ़ता जाता है। भारती जी का मुख्य उद्देश्य पाठक को गन्तव्य तक पहुँचाना है। ताकि वह रास्ते में थकावट का अनुभव न करे, खीझ न उठे।

भारती जी के उस प्रेम ने, जो उन्हें अपने परिवेश से था, जो अंकुर बन बार–बार किरदारों के दिल में मानवता के रूप में फूटा, जो पात्र को पारदर्शिता ही नहीं, तरलता भी प्रदान करता है, उनमें मुहावरों और कहावतों का विशेष योगदान रहा है। भारती जी की भाषा चित्रोपम है। बोलचाल के शब्दों, प्रचलित मुहावरों, शब्दों के कुशल चयन एवं अभिनव वाक्य विन्यास से उनकी भाषा अत्यन्त प्रभावशाली हो गयी है, जो एक कवि की भाँति छोटे–छोटे मधुर काव्यात्मक चित्र उपस्थित करती चलती है और अलग रूप विधानों का निर्माण करती है – जो अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनकर उभरती है।

"काव्य में बुद्धि तत्व, रागतत्व तथा कल्पना तत्व के अतिरिक्त एक चौथा तत्व भी होता है, जिसे चमत्कार या शैली कहते हैं। लेखक अपनी रुचि तथा स्वभाव के अनुसार अपने हृदय के भावों को एक विचित्र प्रकार से प्रकट करता है। इसी विशिष्ट लिखने के ढंग को 'शैली' या 'रीति' कहते हैं।"5

भारती जी ने यथार्थ की जिन्दा तस्वीर पूर्ण कलात्मकता के साथ अपनी कहानियों में प्रस्तुत की है। इन कहानियों में व्यंग्य है, वेदना है, छटपटाहट है, आक्रोश है, तल्खी है और इन सबके बाद इन्सानी प्यार है।

'यह मेरे लिए नहीं' में शैली की दृष्टि से हमारा ध्यान सबसे पहले कहानी के प्रारंभ पर जाता है। प्रारंभ की सीलन और धूप देशकाल का अंग बनकर ही नहीं आये हैं, अपितु उनका प्रतीकात्मक अर्थ है। सीलन दीनू की कुढ़न की ओर संकेत करती है तथा धूप का चकता घर के बाहर के सूरज की ओर। 'सूरज का सातवां घोड़ा' उपन्यास की समस्त कहानियाँ प्रतीकात्मक हैं। यह विभिन्न शैलियों में लिखा गया लघु उपन्यास है। सभी शैलियां परस्पर कहानियों के समान अनुस्यूत हैं जिन्हें पृथक–पृथक नहीं देखा जा सकता। इसमें मनोविश्लेषण, प्रतीकात्मक, नाटकीय, रूमानी, चित्रात्मक, आत्मकथात्मक आदि शैलियाँ प्रस्तुत की गई हैं। इस प्रकार भारती जी के कथा साहित्य में प्रयुक्त जीवन शैली प्राणों का स्पन्दन बनकर उमड़ती चलती है तथा संपूर्ण साहित्य को विशिष्ट बना देती हैं। इस शैली की सबसे बड़ी विशेषता रसात्मकता, प्रभावोत्पादकता और प्रेषणीयता है। एक के बाद एक पात्र भारती जी की शैली से उतरते चले जाते हैं। जैसे कवित्व और कल्पना का सौंदर्य–सागर एक–एक शब्द से छलका पड़ता है।

"धर्मवीर भारती ने भावुकता के स्तर से नगर के मध्यम एवं निम्न वर्ग की समस्याओं को अपनी कहानियों में चित्रित किया है। आज का मानव अपनी परिस्थितियों से टूटा हुआ है, किंतु उसमें नवीन मूल्यों के प्रति एक आशा है, ललक है और वही उनकी ओर अग्रसर हो रहा है।" 6

"प्रगतिशील आंदोलन से कुछ दिन तक संबंधित रहने के कारण मानवीय मूल्यों के प्रति उनमें आस्था है। वे आध्यात्मिक मूल्यों के स्थान पर मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा में विश्वास करते हैं। यही कारण है कि उनकी कहानियों के पात्रों में जिजीविषा है।" 7 मूल्यानुसंक्रमण के प्रभाव कुछ प्रच्छन्न और कुछ हल्की छुवन के साथ प्रवेश करते हैं तथापि यह स्पष्ट है कि उनके प्रभाव को पृथक से लक्षित, इंगित और परिभाषित किया जा सकता है। भारती जी ने मूल्यहीनता का चित्रण अनेक कहानियों में किया है। 'गुलकी बन्नो' में अपेक्षित विद्रोह न आ पाने के कारण ही दुख है। गुलकी पुरानी रूढ़ियों से चिपटी हुई आज की समाज व्यवस्था है। वह (गुलकी) भली–भांति जानती है कि उसे दासी बनाने के लिए उसका पति उसे लेने आया है, किंतु उसमें आशा और विश्वास है कि शायद सौत का राज नहीं चल पाये।

भारती जी कथा–साहित्य में मार्मिकता के साथ–ही–साथ जीवन का स्वच्छ दृष्टिकोण भी निहित है। आज के मशीन युग में नैतिकता का प्रश्न जटिल है। जिस धरातल पर आज समाज खड़ा हुआ वहाँ उसे पुरानी मान्यताएँ तो समाप्त कर दीं है, परंतु जीवन के नये आदर्शों को ढालने में वह असफल रहा है। भारती जी का उद्देश्य ऐसे ही समाज में एक स्वस्थ प्रेम की भावना को विकसित करना है। भारती जी के कथा–साहित्य ने हर क्षेत्र में नये आयामों का संस्पर्श किया। उन्होंने युगबोध और समकालीन परिवेश को अपने सृजन के माध्यम से रूपायित किया। मानवतावादी दृष्टिकोण से संपृक्त उनका साहित्य संपूर्ण विश्व में शांति का आकांक्षी है।

संदर्भ सूची

1. राय विवेकी, हिन्दी कहानी समीक्षा और संदर्भ, पृ.सं. 60

2. जैन सविता, हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का अनुशीलन, पृ.सं. 4

3. बांदिवडेकर चंद्रकांत, धर्मवीर भारती ग्रंथावली खंड दो, पृ.सं. 178

4. राजपाल हुकुमचंद, धर्मवीर भारती साहित्य के विविध आयाम, पृ.सं. 58

5. सिंह विजयपाल, भारतीय काव्यशास्त्र, पृ.सं. 159

6. लवानिया रमेशचंद्र, हिंदी कहानी में जीवन–मूल्य, पृ.सं. 236

7. लवानिया रमेशचंद्र, हिंदी कहानी में जीवन–मूल्य, पृ.सं. 236